आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2537 • उदयपुर, रविवार 05 दिसम्बर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

निराश जिंदगी में उम्मीद की दस्तक

हादसों में हाथ–पैर खोने वाले लोगों को संस्थान द्वारा सितम्बर में देश के विभिन्न स्थानों पर निःशुल्क शिविर आयोजित कर कृत्रिम हाथ–पैर लगाए गए। इससे पूर्व इनके कृत्रिम अंग बनाने के लिए मैजरमेंट शिविर लगाए गए थे। जिनमें दिव्यांगों की जांच कर ऑपरेशन योग्य दिव्यांगों का चयन भी किया गया।

सागर– बुंदेलखंड मेडिकल कॉलेज परिसर में क्षेत्रीय विधायक माननीय श्री शैलेन्द्र जी जैन के सौजन्य से कृत्रिम अंग वितरण शिविर आयोजित हुआ। जिसमें 41 दिव्यांग लाभान्वित हुए। शिविर के मुख्य अतिथि क्षेत्रीय सांसद माननीय श्री राज बहादुर सिंह जी एवं शिविर सौजन्यकर्ता श्री शैलेन्द्र जी जैन थे। अध्यक्षता जिला कलेक्टर श्री दीपक आर्य ने की। विशिष्ट अतिथि नगर निगम आयुक्त श्री रामप्रकाश अहिरवार, मेडिकल कॉलेज के अधीक्षक डॉ. आर. एस. वर्मा तथा श्री अरुण सर्राफ थे। अतिथियों ने 24 दिव्यांगों को कृत्रिम हाथ–पैर तथा 17 को कैलिपर वितरित किए। शिविर में टेक्नीशियन श्री नाथू सिंह व शिविर प्रभारी श्री हरिप्रसाद लढ्ढ़ा व श्री नरेन्द्र सिंह झाला ने अतिथियों का स्वागत किया।

बागोदरा – मंगल मंदिर मानव सेवा परिवार एवं संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में बागोदरा (गुजरात) में कृत्रिम अंग माप शिविर आयोजित किया गया। शिविर में कुल 93 दिव्यांगों का पंजीयन हुआ।

जिनमें से 41 के लिए कृत्रिम अंग तथा 8 के कैलिपर बनाने के लिए टेक्नीशियन श्री नाथू सिंह व श्री उत्तम चंद ने माप लिया। मुख्य अतिथि पूर्व मंत्री एवं विधायक श्री भूपेन्द्र सिंह सुदासमा थे। अध्यक्षता बावला के पूर्व विधायक श्री कांतिभाई निकुम ने की। विशिष्ट अतिथि अहमदाबाद के उप जिला प्रमुख श्री रमेश भाई मकवाना, मंगल मंदिर परिवार के प्रमुख श्री दिनेश भाई एम लाठिया, समाजसेवी सर्वश्री प्रभात बाबू भाई मकवाना, रमेश भाई ठुमार, विक्रम भाई मंडोरा, भरत भाई सोलंकी तथा शाखा प्रेरक श्री राघवेन्द्र प्रताप सिंह थे। शिविर प्रभारी हरिप्रसाद लढ्ढ़ा व नरेन्द्र सिंह झाला ने अतिथियों का स्वागत किया। व्यवस्था में फिजियोथैरेपिस्ट रक्षिता वघासीया व प्रकाश डामोर ने सहयोग किया।

अबोहर – श्री बालाजी समाजसेवा संघ के सहयोग से अबोहर (पंजाब) में विशाल दिव्यांग जांच एवं ऑपरेशन चयन शिविर आयोजित किया गया। जिसमें कुल 210 दिव्यांगों ने पंजीयन करवाया।

जिनमें से ऑपरेशन योग्य 39 दिव्यांगों का डॉ. एस.एल. गुप्ता ने चयन किया। शेष लोगों को उनकी जरूरत के मुताबिक सहायक उपकरण दिए गए। मुख्य अतिथि समाजसेवी श्री राजेन्द्र जी पाल थे। अध्यक्षता बालाजी समाजसेवा संघ के चेयरमैन श्री गगन जी मल्होत्रा ने की। विशिष्ट अतिथि श्री अमित भाई थे। संचालन शिविर प्रभारी श्री मुकेश शर्मा ने किया।

लखनऊ– नेहरू युवा केन्द्र, लखनऊ में संस्थान के तत्वावधान में कृत्रिम अंग एवं कैलिपर्स वितरण शिविर आयोजित हुआ। जिसमें टेक्नीशियन श्री नाथू सिंह ने 8 दिव्यांगों के कृत्रिम हाथ–पैर जबकि 20 के कैलिपर्स लगाए। संस्थान के स्थानीय आश्रम प्रभारी श्री बद्रीलाल शर्मा ने बताया कि शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि समाजसेवी श्री वी.के. सिंह ने किया। अध्यक्षता श्रीमती प्रतिभा श्रीवास्तव ने की। विशिष्ट अतिथि सर्वश्री नवीन कुमार जी, लक्ष्मण प्रसाद जी, सुभाष चन्द्र जी एवं दिलीप कुमार जी थे। अतिथियों का स्वागत शिविर प्रभारी श्री हरिप्रसाद लढ्ढ़ा एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री बृजपाल सिंह ने किया।

हैदराबाद – टूरिस्ट प्लाजा – कांचीगुड़ा,हैदराबाद (तेलंगाना) में जेसीआई के सहयोग से कृत्रिम अंग वितरण शिविर आयोजित किया गया। जिसमें 25 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग तथा 2 को कैलिपर्स प्रदान किए गए। इस दौरान उपस्थित अन्य दिव्यांगों के कृत्रिम अंग बनाने के लिए टेक्नीशियन श्री भंवर सिंह द्वारा नाप लिया गया। मुख्य अतिथि जेसीआई बंजारा के अध्यक्ष श्री गोविंद जी कंकाणी थे।

अध्यक्षता समन्वयक डॉ. मोहित जैन ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में जेसीआई के सदस्य सर्वश्री पंकज कपूर, सुनील कुमार, संतोष कुमार व दिलीप कुमार उपस्थित थे। स्थानीय आश्रम प्रभारी श्री महेन्द्र सिंह ने अतिथियों का स्वागत तथा साधक श्री लाल सिंह भाटी ने संचालन किया। धन्यवाद ज्ञापन फिजियोथैरेपिस्ट डॉ. के अरुण ने किया।

खाजूवाला – खाजूवाला (बीकानेर) की जाट धर्मशाला में सम्पन्न निःशुल्क विशाल दिव्यांग जांच, कृत्रिम अंग माप तथा ऑपरेशन चयन शिविर में 37 दिव्यांगों का पोलियो सुधार सर्जरी के लिए चयन किया गया। जबकि 28 के कैलिपर और 20 के लिए कृत्रिम अंग (हाथ–पैर) बनाने का माप लिया गया। ऑपरेशन के लिए चयन डॉ. एस.एल गुप्ता ने किया तथा कैलिपर व कृत्रिम अंग बनाने का माप टेक्नीशियन श्री भंवर सिंह ने लिया। विश्व हिंदू परिषद् की बीकानेर शाखा के सहयोग से आयोजित कैम्प के मुख्य अतिथि समाजसेवी श्री भोजराज लेखाना थे। अध्यक्षता श्री भागीरथ जी ज्याबी ने की।

विशिष्ट अतिथि के रूप में सर्वश्री चेतराम जी, रामधन जी विश्नोई, फूलदास जी स्वामी, संस्थान शाखा के संयोजक राजाराम जी जाखड़, राजकुमार जी ढोलिया, श्यामलाल जी जांगीड़, अजय कुमार जी तथा श्रीमती मधु जी शर्मा मंचासीन थे। शिविर प्रभारी श्री मुकेश शर्मा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान के निःशुल्क सेवा प्रकल्पों की जानकारी दी।

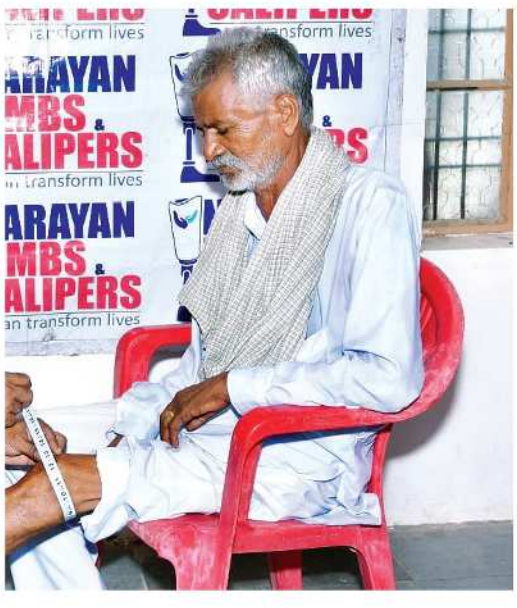

दिव्यांगों के जीवन को सरल और सुचारु बनाएं

शारीरिक दृष्टि से अक्षम (दिव्यांग) व्यक्तियों के पुर्नवास एवं विकास को लेकर प्रतिवर्ष 3 दिसंबर को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विकलांग दिवस मनाया जाता है। इसकी शुरूआत 1992 से संयुक्त राष्ट्र संघ की पहल पर हुई थी। भारत के प्रधानमंत्री ने इसे दिव्यांग दिवस का सम्बोधन प्रदान किया। इसका उद्देश्य दिव्यांगों के जीवन को बेहतर और स्वावलंबी बनाना है। पूरी दुनिया के 15 प्रतिशत लोग विकलांगता से ग्रस्त है। जिन्हें रोजमर्रा की जिंदगी में अनेक कठिनाइयों का सामना करना और इनके समग्र विकास के साथ इनके अधिकारों की रक्षा करना है। निःशक्तजन से भेदभाव करने पर दो साल तक की कैद और अधिकतम 5 लाख रुपए के जुर्माने का प्रावधान किया गया है। जहां तक भारत का सवाल है यहां की आबादी का 2.2 प्रतिशत हिस्सा दिव्यांग है। भारत सरकार ने इनके विकास के लिए सरकारी नौकरियों व अन्य संस्थानों में 3 प्रतिशत आरक्षण के प्रावधान को बढ़ाकर 4 प्रतिशत कर दिया है। दिव्यांग शारीरिक दृष्टि से भले ही अक्षम हो लेकिन उनमें कुदरत कुछ ऐसी प्रतिभा का रोपण कर देती है जिससे वे दुनियाभर में अपने कौशल का योगदान सुनिश्चित कर प्रतिष्ठा अर्जित करते हैं। ऐसे कुछ व्यक्तियों में गायक और संगीतकार रवीन्द्र जैन, नृत्यांगना सोनल मानसिंह, नृत्यांगना सुधाचंद्रन, पहली एवरेस्ट विजेता दिव्यांग महिला अरुणिमा सिन्हा, क्रिकेटर एस चंद्रशेखर, पैरालिपक स्वर्ण विजेता अवनि लेखरा, रजत पदक विजेता देवेन्द्र झाझड़िया, दीप मलिक का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। इन्होंने अपने आपको सिद्ध किया है। ऐसी अनेक और भी जानी मानी हस्तियां हैं, जिन्होंने अपनी दिव्यांगता को व्यक्तित्व निर्माण में आड़े नहीं आने दिया।

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान भी आपके सहयोग और दिव्यांगों की निःशुल्क सेवा, चिकित्सा, शिक्षण–प्रशिक्षण एवं पुनर्वास के क्षेत्र में पूरे समर्पण के साथ संलग्न है। विकलांगता दिवस पर हमें इस बात की शपथ लेनी है कि दिव्यांगों बंधु–बहनों के जीवन को सरल और सुचारू बनाने में हम अपनी सामर्थ्य के साथ अपना योगदान सुनिश्चित करेंगे।

झूठ नहीं बोलता आईना

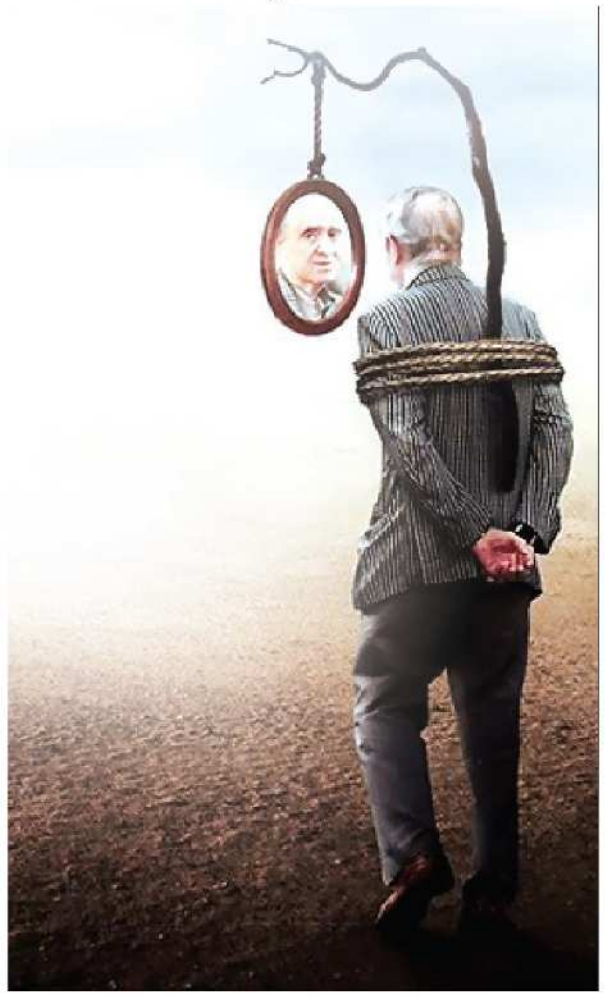

मनुष्य के पास भौतिक सुख– सुविधाएं कितनी भी हो, अन्त समय में उनका कोई मूल्य नहीं रह पाता। मृत्यु के आगे सभी बेबस हैं। इसलिए जीवन को सार्थक करने के लिए धन का मोह न कर सेवा के पथ को अंगीकार करना चाहिए।

एक साहूकार के पास पर्याप्त धन होते हुए भी वह दिन–रात येन–केन– प्रकारेण धन की जुगाड़ मे रहता था। उसे इस बात का अंहकार भी था कि वह धन कमाने में बहुत ही चतुर है।

इतने धन के बावजूद वह किसी दुःखी या गरीब की मदद करने का विचार मन में नहीं लाता था। जो भी याचक उसके घर आता, वह झिड़ककर भगा देता था। धन की लालसा में एक दिन उसने एक महात्मा जी को भोजन पर आमंत्रित किया और उनसे व्यापार में वृद्धि का आशीर्वाद मांगा। महात्मा जी को लौटते वक्त उसने एक आईना दिया और कहा कि यह उस व्यक्ति को दे दें, जो उन्हें सबसे ज्यादा मूर्ख लगे।

लम्बे समय बाद घूमते हुए महात्मा जी एक दिन फिर साहूकार के शहर में आए। वे साहूकार के घर गए देखा कि वह मृत्युशैया पर लेटा है। साहूकार ने उससे हाथ जोड़कर कहा, 'महाराज क्या कोई ऐसी विद्या है जिससे मेरे प्राण बच सकें ?' महात्मा जी ने ऐसी किसी भी विद्या से इनकार किया। उन्होंने कहा, 'तुम जिन्दगीभर धन कमाने में लगे रहे,कोशिश करो कि वह तुम्हारे प्राण बचा सके।' साहूकार ने कहा, 'यह मैं कर चूका हूं, लेकिन लाभ नहीं हुआ।' तब महात्मा जीने अपने झोले से वही आईना उसे दिखाया जो उसने दिया था। महात्मा जी बोले, 'मुझे अभी तक कोई मूर्ख नहीं मिला लेकिन तुम सबसे बड़े मूर्ख हो जिसने धन से मृत्यु को खरीदना चाहा। इसलिए इस आईने के पात्र केवल तुम हो।'

सम्पादकीय

मनुष्य असीम ऊर्जा का भण्डार है। यों तो ऊर्जा भी एक सीमायुक्त भाव है किन्तु असीम दृष्टि से है कि इसका सृजन सतत है। ऊर्जा की उत्पति निरंतर है। किन्तु ऊर्जा की उत्पति की निरंतरता तभी कायम रह सकती है जब इसका सतत उपयोग भी होता रहे। यदि सृजित ऊर्जा का उपयोग नहीं होगा तो उसका सृजन बाधित होगा। ऊर्जा के संग्रहण की भी सीमा है। अतः जैसे–जैसे ऊर्जा का व्यय होता रहेगा, वैसे–वैसे उत्पति भी होती रहेगी।

मनुष्य सामान्यतः उत्पति का तो आकांक्षी सदैव रहता है किन्तु खर्च की प्र.ति में कंजूस होता है। ऊर्जा का संतुलन ही आमद व खर्च में है। जब ऊर्जा–व्यय की बात होती है तो उसी के साथ उपयोग के दो रूप सदुपयोग व दुरुपयोग भी जुड़े हैं। सत्य तो यह है कि सदुपयोग ही ऊर्जा का सम्मान है। सदुपयोग यानी पहले परार्थ के लिये और फिर शेष रहे तो स्वार्थ के लिये। पहले औरों के लिये, फिर अपने लिये। पर सामान्यतः होता इसका उलट है, इसलिये ऊर्जा का सृजन बाधित होने लगता है। यदि हम अपनी ऊर्जा का परहितार्थ उपयोग करेंगे तो सर्व–कल्याण होगा। सर्व में भी मैं भी हूँ। अतः ऊर्जा की उपयोगिता समझना ही बोध है।

कुछ काव्यमय

क्षमता सबमें ही भरी,
जीव-जन्म के साथ।
कैसे उसको काम लें,
ये है आने हाथ।।
खरचे तो मिलती रहे,
नही खरचें रुक जाय।
इसका सद् उपयोग है,
परहित बनें सहाय।।
नित नूतन ऊर्जा मिले,
यदि करें उपयोग।
यह शाश्वत संकल्पना,
नहीं महज संयोग।।

- वरदीचन्द राव

अंतहीन संभावनायें – दिव्यांगता मिटाने के लिये विभिन्नआयाम
WORLD OF HUMANITY का निर्माण प्रगति पर.....

अंतहीन संभावनाएं - दिव्यांगता मिटाने के विभिन्न आयाम

चिकित्सा
- निदान (एक्स रे, ओपीडी, लैब)
- उपचार (कृत्रिम अंग और कैलीपर्स)
- पोस्ट ऑपरेटिव केयर (वार्ड, आईसीयू)
- चिकित्सा सहायता (फार्मेसी एवं फिजियोथेरेपी)

स्वावलम्बन
- हस्तकला या शिल्पकला
- सिलाई प्रशिक्षण
- डिजिटल (कंप्यूटर) प्रशिक्षण
- मोबाइल फोन मरम्मत प्रशिक्षण
- नारायण चिल्ड्रन एकेडमी (निःशुल्क डिजीटल स्कूल)

सशक्तिकरण
- दिव्यांग शादी समारोह
- दिव्यांग सीरोज
- दिव्यांग खेल अकादमी
- दिव्यांग संगोष्ठी - सेमीनार
- इंटर्नशिप वॉलंटियर

सामुदायिक सेवाएं
- आदिवासी और ग्रामीण शिक्षा
- वस्त्र वितरण
- दृश्य एवं श्रवण बाधित के लिए आवासीय विद्यालय
- भोजन सेवा
- राशन वितरण
- वस्त्र और कंबल वितरण
- दवा वितरण

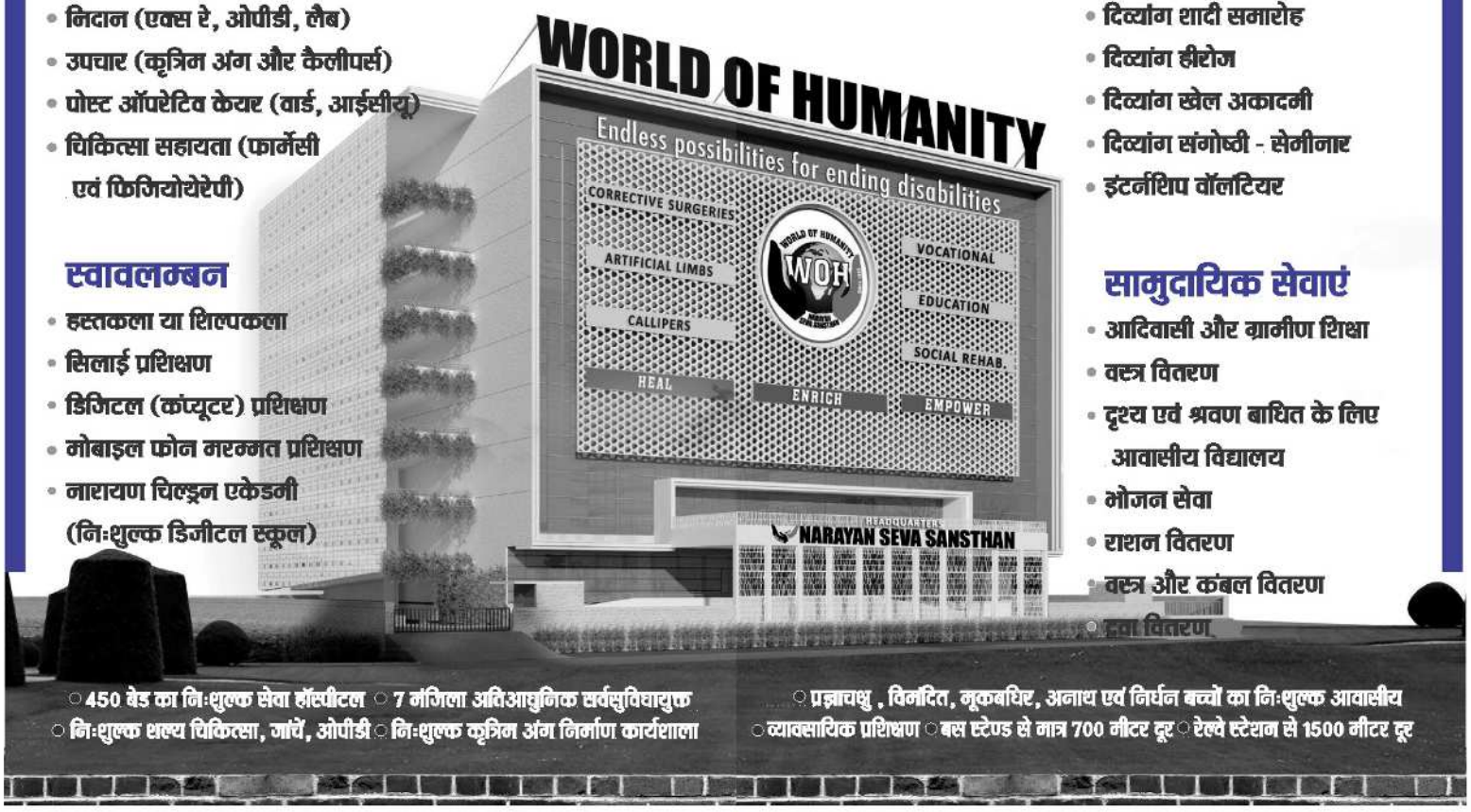

○ 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल ○ 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त ○ निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी ○ निःशुल्क कृत्रिम अंग निर्माण कार्यशाला
○ प्रज्ञाचक्षु , विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों का निःशुल्क आवासीय ○ व्यावसायिक प्रशिक्षण ○ बस स्टेण्ड से मात्र 700 मीटर दूर ○ रेल्वे स्टेशन से 1500 मीटर दूर

मानवीय सेवा हेतु करें सहयोग
दानदाताओं के सम्मान में

वक्ष प्रतिमा
अस्पताल में प्रवेश पर

डायमण्ड ईंट ₹51,00,000
सौजन्य दाता
- टीवी चैनलों पर 3 मिनट की प्रोफाइल प्रसारित की जायेगी।
- नारायण सेवा की मासिक पत्रिका में एक पृष्ठ रंगीन प्रकाशित होगा। पत्रिका (10 लाख प्रति)।
- सेवा समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में स्वागत।
- 3 कृत्रिम अंग एवं चिकित्सा शिविर का सौजन्य लाभ मिलेगा।
- 4000 पेरोन्ट तक भोजन पहुंचाने का पुण्य मिलेगा।
- जन्मदिन और सालगिरह का उत्सव दिव्यांगों के साथ मनाएं।
- प्रतिदिन दाता और उसके परिवार के लिए 4000 रोगीजन करेंगे कुशल क्षेम की प्रार्थना।

थीडी फ्रेम
अस्पताल में प्रवेश पर

प्लेटिनम ईंट ₹21,00,000
सौजन्य दाता
- टीवी चैनलों पर 2 मिनट की प्रोफाइल प्रसारित की जायेगी।
- नारायण सेवा की मासिक पत्रिका में आधा पृष्ठ रंगीन प्रकाशित होगा। पत्रिका (10 लाख प्रति)।
- सेवा समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में स्वागत।
- आपश्री को 2 कृत्रिम अंग एवं चिकित्सा शिविरों में सम्मानित किया जायेगा।
- 15 दिनों में 4000 रोगी तक भोजन पहुंचाने का पुण्य मिलेगा।
- जन्मदिन और सालगिरह का उत्सव दिव्यांगों के साथ मनाएं।
- प्रतिदिन दाता और उसके परिवार के लिए 4000 रोगीजन करेंगे कुशल क्षेम की प्रार्थना।

मानवीय सेवा हेतु करें सहयोग

फोटो फ्रेम
अस्पताल में प्रवेश पर

स्वर्ण ईंट ₹11,00,000
सौजन्य दाता
- टीवी चैनलों पर 1 मिनट की प्रोफाइल प्रसारित की जायेगी।
- नारायण सेवा की मासिक पत्रिका में क्वार्टर पेज रंगीन प्रकाशित होगा। पत्रिका (10 लाख प्रति)।
- सेवा समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में स्वागत।
- आपश्री को शिविरों में सम्मानित किया जायेगा।
- 7 दिन तक रोगी एवं परिचारकों को भोजन खिलाने का पुण्य मिलेगा।
- जन्मदिन और सालगिरह का उत्सव दिव्यांगों के साथ मनाएं।
- प्रतिदिन दाता और उसके परिवार के लिए 4000 रोगीजन करेंगे कुशल क्षेम की प्रार्थना।

पट्टिका पर नाम
अस्पताल में चिल्ड्रन वार्ड

रजत ईंट ₹5,00,000
सौजन्य दाता
- सेवा कार्यक्रमों में विशिष्ट अतिथि के रूप में स्वागत।
- दानदाता को रोगियों का 3 दिन भोजन खिलाने का पुण्य मिलेगा।
- जन्मदिन और सालगिरह का उत्सव दिव्यांगों के साथ मनाएं।
- आपश्री और आपके परिवार के लिए हर दिन होगी प्रार्थना।

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

दूसरों के आंसू पोंछना : सच्ची कीर्ति

विपुल संपत्ति, असीम सत्ता, गजब का सौंदर्य, अद्भुत पराक्रम, ये सब कीर्ति के कारण अवश्य हैं, पर ये सभी कारण स्थायी नहीं हैं। किसी भी क्षण तुम भिखारी बन सकते हो, किसी भी क्षण तुम सत्ता भ्रष्ट हो सकते हो, किसी भी पल तुम्हारे सौंदर्य में कमी आ सकती है और किसी भी क्षण तुम्हारा शरीर तुम्हें धोखा दे सकता है, और ऐसी स्थिति में तुम्हारी कीर्ति मिट्टी में मिले बिना नहीं रहती है।

परंतु.....कीर्ति का एक कारण ऐसा है जिसकी वजह से तुम्हारी विदाई के बाद भी लोगों के दिल में लोगों की जुबां पर तुम्हारा नाम रहता है और वह कारण है–दूसरे के आंसू पौंछने का प्रयत्न। दूसरों के सुख के लिए तुम कितने प्रयत्न करते हो, यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है, पर दूसरों के दुःख को दूर करने के लिए तुम कितने प्रयत्नशील हो, यह अधिक महत्वपूर्ण है। आंसू और हास्य के क्षेत्र में दो प्रकार के व्यक्तियों को श्रीमंत मानती हूं। सामने वाले के आंसू देखकर स्वयं के चेहरे का हास्य गायब हो जाए, वह प्रथम नम्बर का श्रीमंत व्यक्ति और सामने वाले के चेहरे का हास्य देखकर स्वयं की आंखों के आंसू सूख जाए, वह दूसरे नंबर का श्रीमंत व्यक्ति। इन दो प्रकार के श्रीमंत आदमियों में से एक में भी हमारा नंबर है भला? यदि नहीं तो इतना ही कहूँगी कि ऐसे श्रीमंत बने बिना इस दुनिया से हमें विदा नहीं होना है। कहा है – 'जिस नयन ने करुणा छोड़ी, उसकी कीमत फूटी कौड़ी' हरींद्र देव की ये पंक्तियाँ हमें चुनौती देती हैं कि हमारे पास यदि करुणा है तो ही हमारे पास आंख है। अन्यथा वह आंख, आंख नहीं पर फूटी कौड़ी के मानिंद है।

– प्रवीणा जी म.सा.

मल्लाह की सूझबूझ से यात्रियों की जान बची

एक नाव पूरी तरह यात्रियों से भरी थी। बीच मझधार से गुजरते ही मल्लाह की नजर पड़ी कि यात्रियों के पांव के बीच में नाग फन फैलाए बैठा है। यदि वह कहता कि नाव में नाग है तो यात्रियों में अफरा– तफरी मच जाती और संतुलन बिगड़ने से नाव एक तरफ झुककर डूब जाती, कई यात्री मर जाते।

मल्लाह ने धैर्य रखा व नाव को तेज गति से खेना चालू कर दिया देखते ही देखते नाव किनारे के नजदीक आने लगी, किन्तु नाग यात्रियों के नीचे से निकलकर मल्लाह के नजदीक आने लगा सभी यात्री नाग से बेखबर थे। किनारे पर नाव पहुंचते ही मल्लाह के पांव से नाग लिपट गया और मल्लाह चिल्लाया– नाग– नाग भागो भागो देखते ही देखते सब यात्री ने नाव से कूदकर अपने – अपने रास्ते पर चल दिये।

सबकी जान बचाने वाले के बारे मे किसी ने नहीं सोचा। परन्तु उसके मुख पर अभी भी इस बात का संतोष था कि बीच मंझधार में धैर्य रखकर अपनी सवारियों की जान बचाने व उन्हें सकुशल पार लगाने के अपने दायित्व के निर्वहन में वह सफल हुआ। उसके सद्कर्म से यात्री नदी पार हुए और वह भवसागर के पार हो गया।

श्री कैलाश जी मानव के प्रवचन की कथायें अंश

शास्त्री जी–कंकर

ये बात तब की है जब शास्त्री जी प्रधानमंत्री थे। एक बार चपरासी ने देखा कि शास्त्री जी के जूते में कंकर पड़ा हुआ है उन्होंने तुरन्त हटाया। जब शास्त्री जी ने जूता पहना तो कंकर गायब था। चपरासी से पूछा तो उसने कहा– मैंने हटाया।

शास्त्री जी बोले– ये कंकर मैं जानबुझकर जूते में रखता हूँ जिससे मुझे अपने देश के गरीब नागरिकों की याद आती रहे। मैं उनके लिये कुछ कर सकूंगा।

सुकरात – आईना

महान दार्शनिक सुकरात को बार–बार आईना देखने की आदत थी। जबकि सुकरात बहुत कुरूप थे। एक बार किसी व्यक्ति ने उन्हें टोका– कि आप तो बदसूरत है क्यों बार–बार आईना देखते हो? सुकरात ने जवाब देते हुए कहा– कि मैं अपने गुणों को इस तरह बढ़ाना चाहता हूँ कि लोगों को मेरी कुरूपता नजर ना आये।

ट्रेन–प्यास

एक बार ट्रेन में कोई व्यक्ति पानी बेच रहा था पास में कई यात्री उससे बार–बार पैसे कम करने को बोल रहा था। इतने में किसी अन्य व्यक्ति ने पूछा तो पानी वाले ने जवाब दिया– उन्हें प्यास नहीं है वर्ना इतना मोलभाव नहीं करते।

सुभाष–पुस्तकें

सुभाष जब छोटे थे एक बार उन्होंने पिताजी से कुछ पैसे माँगे तो पिताजी ने पीछे मुनीम लगा दिया कि सुभाष इन पैसों का क्या करता है? सुभाष पैसे को लेकर अपने एक गरीब मित्र के पास गये, और उसे पुस्तकें दिलवाई। जब बात पिताजी तक पहुँची तब उन्होंने सुभाष को बुलाया। तब उन्होंने पीठ थपथपाई। बोले– बेटा तुमने बहुत अच्छा काम किया।

मीठे फल

एक बार किसी सेठ ने अपने नौकर को कोई फल दिया, बाद में स्वयं भी फल लिया, मगर फल कडवा था, नौकर को बुलाकर पूछा फल कैसा था? तो नौकर ने बताया फल मीठा था, सेठ ने डांटते हुए कहा–फल तो कडवे हैं, नौकर बोला साहब रोज तो आप मीठे फल देते हो, आज कडवा आ गया तो क्या? सेठ उसका जवाब सुनकर बडा प्रसन्न हुआ।

शिवाजी–शेरनी का दूध

एक बार समर्थ गुरु रामदास जी बीमार पड़े तो वैद्य ने शेरनी का दूध लाने को कहा। शिवाजी को जब पता चला तो वो जंगल की ओर चल पड़े। बहुत दूर जाने के बाद शेरनी दिखी। अपने बच्चे को दूध पिलाती हुई। शेरनी से निवेदन किया– मेरे गुरुदेव बीमार पड़े हैं, आपका दूध चाहिये फिर शेरनी का दूध दोहने लगे। लाकर गुरुजी को दिया। उसे पीने के बाद कुछ ही समय में वे ठीक हो गये।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पैन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूटेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023